Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिलस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

मई/2023 ई

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

MAY-2023

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Date of Publication:10-05-2023

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

चेन्नई बुक फ़ेर 2023 में ज़ायिरीन को अराकीन मज्लिस अंसारुल्लाह चेन्नई जमाअत का सन्देश देते हुए।

23.03.2023 को चेन्नई के हस्पताल में मरीज़ों को फल वितरण करते हुए अराकीन मज्लिस अंसारुल्लाह चेन्नई ।

20-04-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह पटना द्वारा पाटलापुर (बिहार) में ग़रीबों को ईद के सामान भेंट करते हुए ।

20.02.2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह पटना द्वारा घंगारा (बिहार) में ग़रीब बच्चोँ को पढ़ने के (20) कुरसी-मेज़ भेंट करते हुए।

25-04-2023 को गुरदासपुर (पंजाब) के एक अधिकारी को जमाअति लिट्रेचर पेश करते उहे जनाब अब्दुल रहीम साहब ।

23-03-2023 को हैदराबाद (तेलंगाना) के एक पाठशाला में अनाथ बच्चोँ को फल वितरण के बाद एक दृश्य ।

18-04-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह शिमोगा, (करनाटक) द्वारा आयोजित तक़रीब आमीन के अवसर का एक दृश्य ।

18-04-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह सेंट थॉमस (चेन्नई, तमिल नाडु) द्वारा आयोजित तक़रीब आमीन के अवसर का एक दृश्य ।

25-04-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह कम्बालक्काड (केरल) द्वारा गरमी से परीशान लोगोँ को पीने का साफ़ पानी पहुँचाते हुए ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 21 | मई 2023 | Issue - 05

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)
डाक्टर अब्दुल माजिद
09915279005

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय : ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा में प्राप्त होने वाली सदात्माएँ	4
भाषण: अताऊल मुजीब लोन, सादर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत	6

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم

दर्सुल क़ुर्आन

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۔ (बक़रह : 184-185)

अनुवाद : अल्लाह ने तुममें से जो ईमान लाए और नेक काम किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि वह उन्हें धरती पर ख़लीफ़ा ज़रूर बनाएगा, जिस तरह उसने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उनके लिए उनके दीन को, जो उसने उनके लिए पसंद किया, ज़रूर उन्हें दृढ़ता प्रदान करेगा, और उनके भय की स्थिति के बाद, वह अवश्य ही उन्हें शांति की अवस्था में बदल देगा। वह मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसी को भागीदार नहीं बनाएँगे और जो इस के बाद भी नाशुक्री करे तो यही वे लोग हैं जो नाफ़-रमान हैं।

दर्सुल हदीस

عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَكُوْنُ النُّبُوَّةُ فِيْكُمْ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا عَاضًّا فَتَكُوْنُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا جَبْرِيَّةً فَيَكُوْنُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ يَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ ثُمَّ سَكَتَ۔ (मस्नद अहमद जिल्द 4 सफ़ा 273)

अनुवाद - हज़रत हुदैफा रज़ियल्लाहु अन्हों से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तक अल्लाह चाहेगा तुम्हारे बीच नबुव्वत रहेगी, फिर वह इसको उठा लेगा और खिलाफत की स्थापना नबुव्वत के आधार पर होगी। फिर जब अल्लाह चाहेगा तो इस नेमत को भी उठा लेगा। फिर उसकी तक़दीर के अनुसार एक अत्याचारी राज्य स्थापित होगा (जिससे लोग तंगी का अनुभव करेंगे) जब यह काल समाप्त होगा, तब उसकी दूसरी तक़दीर (नियति) के अनुसार उससे भी अधिक अत्याचारी राज्य स्थापित होगा, यहाँ तक कि अल्लाह की दया जोश में आएगी और उत्पीड़न के इस दौर का अंत कर देगा। उसके बाद फिर खिलाफ़त अला मिंहाज-ए-नुबुव्वत कायम होगी। यह कह कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप हो गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

"मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत हूं तथा मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत के स्वरूप होंगे।"

"यह खुदा तआला की सुन्नत है तथा जब से कि उसने मानव को धरती पर पैदा किया सदैव इस सुन्नत को वह ज़ाहिर करता रहा है कि वह अपने नबियों तथा रसूलों की सहायता करता है तथा उनको विजय देता है जैसा कि वह फ़रमाता है

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ (अल् मजादिल: आयत 22)

और विजय से अभिप्राय यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि ख़ुदा का तर्क धरती पर पूर्ण हो जाये तथा उसका मुक़ाबला कोई न कर सके इसी प्रकार ख़ुदा तआला दृढ़ निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है। तथा जिस नेक चलनी को वे दुनिया में फ़ैलाना चाहते हैं उसका बीजरोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है। लेकिन उसकी सम्पूर्णता उनके हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे समय में उनको मौत देकर जो सामान्यत: एक नाकामी का भाय अपने साथ रखती है, विरोधियों को हँसी और ठट्ठे और व्यंग और अपशब्द कहने का अवसर दे देता। और जब वह हँसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी शक्ति का दिखाता है। तथा ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वे उद्देश्य जो कुछ हद तक अधूरे रह गए थे अपनी सम्पूर्णता को पहुँचते हैं। अर्थात् दो प्रकार की कुदरत प्रकट करता है:

(1) प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है।

(2) दूसरे ऐसे समय में जब नबी के देहांत के पश्चात् कठिनाइयों का सामना पैदा हो जाता और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत मिट जायेगी और स्वयं जमाअत के लोग भी चिंता में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं तथा कई अभागी विमुख होने का मार्ग धारण कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली कुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अत: वह जो अंत तक धैर्य रखता है ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है..........सो हे प्रियो जब कि पुरातन से अल्लाह की पद्धति यही है कि ख़ुदा तआला दो कुदरतें दिखलाता है ताकि विरोघियों की दो झूठी ख़ुशियों को मिट कर दिखलादे सो अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पुरातन पद्धति को छोड़ देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास ब्यान की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह सदैवी है जिस का काल कयामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का ब्राहीने अहमदिय्या में वचन है जैसा कि ख़ुदा फ़र्माता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे मानने वाले हैं क़यामत तक दूसरों पर विजय दूंगा सो आवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ताकि इसके पश्चात् वह दिन आवे जो सदैवी वचन का दिन है वह हमारा ख़ुदा वचनों का सच्चा और निष्ठावान और सच्चा ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिस का उसने वचन दिया यद्यपि यह दिन दुनिया के आख़री दिन हैं और बहुत बलाएँ हैं जिन के उतरने का समय है पर अवश्य है कि यह दुनिया कामय र हे जब तक वह सारे वचन पूरे न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी मैं ख़ुदा की ओर से क़ुदरत के रूप में प्रकट हुआ तथा मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत हूं। तथा मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत के स्वरूप होंगे। (अल्-वसिय्यत, रूहानी खज़ाइन, खंड 20 पृष्ठ 304, 306)

सम्पादकीय ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा में प्राप्त होने वाली सदात्माएँ

अल्लाह तआला इस सिलसिला बैअत को कैफ़ीयत-ओ-कमीयत हर लिहाज़ से बड़ा महत्व तथा प्रभुत्व प्रदान करने ने का वर्णन करते हुए बैअत से क़बल 4 मार्च 1889 को एक इश्तिहार में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-:

''यह गिरोह उस का एक विशेष गिरोह होगा और वह उन्हें आप अपनी रूह से ताक़त देगा और उन्हें गंदी ज़िंदगी से साफ़ करेगा और उन की ज़िंदगी में एक पाक तबदीली बख़्शेगा। वह इस गिरोह को बहुत बढ़ाएगा और हज़ारों सच्चे लोगों को इस में दाख़िल करेगा। वह ख़ुद उस की आबपाशी करेगा और इस को नशो-ओ-नुमा देगा यहां तक कि इन की कसरत और बरकत नज़रों में अजीब हो जाएगी।''(मजमूआ इश्तिहारात जिल्द सफ़ा 198)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हों फ़रमाते हैं-:

''इस वक़्त इस्लाम की तरक़्क़ी ख़ुदा तआला ने मेरे साथ संलग्न कर दी है जैसा कि हमेशा वह अपने दीन की तरक़्क़ी खलीफ़ा के साथ संलग्न किया करता है। अत: जो मेरी सुनेगा वह जीतेगा। और जो मेरी नहीं सुनेगा वो हारेगा।''(अलफ़ज़ल 18 मार्च 1914 सफ़ा 1 कालम 3)

अल्लाह तआला के कृपा तथा दया से ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा के 20 साला दौर में 38 नए देशों में जमात की स्थापना हुई और स्तासी लाख से अधिक सदात्माओं ने इस सिलसिला अहमदिया में सम्मिलित होने का सामर्थ्य प्राप्त किया।

वर्ष	बैअतों की संख्या	वर्ष	बैअतों की संख्या
2003	8,92,403	2013	5,40,782
2004	3,49,010	2014	5,55,235
2005	2,97,099	2015	5,67,330
2006	2,93,881	2016	5,84,383
2007	2,61,963	2017	6,09,556
2008	2,54,638	2018	6,47,000
2009	4,01,610	2019	6,68,527
2010	4,58,760	2020	1,12,179
2011	4,80,822	2021	1,25,221
2012	5,14,352	2022	1,76,836
		कुल	87,91,587

(इस्लाम की निशात-ए-सानिया में ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा का अज़ीमुश्शान किरदार और मइय्यत-ए-इलाही : सफ़ा 64) (अलफ़ज़ल इंटरनेशल 15 अगस्त 2022)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:-

''अल्लाह तआला ने जमात को तरक़्क़ी देनी है और दे रहा है.. जमात के लोग .. निष्ठा तथा आज्ञापालन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने के लिए.. ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से दिखाते हैं और दिखा रहे हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की बैअत जिस तरह लोगों ने की वो अल्लाह तआला की शुद्ध सहायता नहीं थी तो और क्या

था।... फिर ख़िलाफ़त-ए-सानिया के इंतिख़ाब के वक़्त.. जमात ने .. हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी की बैअत कर ली और फिर दुनिया ने देखा कि किस तरह तेज़ी से जमात तरक़्क़ी करती चली गई। दुनिया में मिशन हाऊस खुले, मसाजिद बनीं, लिट्रेचर का प्रकाशन हुआ। वे कार्य जिनके करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे आगे बढ़ते रहे। फिर ख़िलाफ़त-ए-साल्सा में अल्लाह तआला ने बावजूद हुकूमत-ए-वक़्त के बहुत सख़्त हमले के जमात को तरक्की से नवाज़ा। कटोरा जमात के हाथ में पकड़ाने वाले ख़ुद बुरी हालत में दुनिया से रुख़स्त हुए। फिर ख़िलाफ़त-ए-राबिया में तरक्की का एक और दरवाज़ा खुला। अल्लाह तआला की सहायताओं के नए दृश्य हम ने देखे। इशाअत-ए-इस्लाम के नए नए रस्ते खुले। ख़लीफ़-ए-वक़्त के हाथ काटने का सोचने वालों के अपने हाथ कट गए और फ़िज़ा में उनके जिस्म बिखर गए लेकिन जमात की तरक़्क़ी के क़दम नहीं रुके। तब्लीग़ के मैदान में विस्तार उत्पन्न हुआ। एम-टी-ए का आरंभ हुआ जिससे हर घर में जमाअत का संदेश पहुंचना शुरू हुआ। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला के वादों का पूर्णता की ओर बढ़ना है और यही चीज़ है यदि कोई समझे तो। अगर यह अल्लाह तआला के वादों का पूरा होना नहीं तो और क्या था। फिर ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा में भी अल्लाह तआला ने अपनी सहायताओं के दृश्य दिखाए। "(ख़ुतबा जुमा 27 मई 2022)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से निष्ठा तथा आज्ञाकारिता की उच्च श्रेणियों को प्राप्त करते हुए हमेशा जुड़ा रहने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

(सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

SONET SOLUTIONS PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

हज़रत अमीरुल मोमीनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के दुआ की स्वीकार्यता के ईमान वर्धक वृतांत और दुआओं के विषय में हुज़ूर अनवर के निर्देश तथा उपदेश

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱسۡتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمۡ لِمَا يُحۡيِيكُمۡۖ وَٱعۡلَمُوٓا أَنَّ ٱللَّهَ يَحُولُ بَيۡنَ ٱلۡمَرۡءِ وَقَلۡبِهِۦ وَأَنَّهُۥٓ إِلَيۡهِ تُحۡشَرُونَ۔

(सूरत इन्फ़ल, आयत 25)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह और रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहा करो जब वह तुम्हें बुलाए, ताकि वह तुम्हें ज़िंदा करे और जान लो कि अल्लाह इन्सान और इस के दिल के मध्य प्रकट होता है और यह भी जान लो कि तुम उसी की तरफ़ इकट्ठे किए जाओगे।

सम्माननीय सभाध्यक्ष तथा श्रोतागण! विनीत के भाषण का विषय है:- "हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिन-स्त्रिहिल अज़ीज़ के दुआ की स्वीकार्यता के ईमान वर्धक वृतांत और दुआओं के विषय में हुज़ूर अनवर के निर्देश तथा उपदेश।

कुरआन मजीद की जो आयत विनीत ने तिलावत की है इस में अल्लाह तआला ने अपने रसूल के अवतरण का उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से मुर्दा लोगों को ज़िंदा करना बताया है। अल्लाह तआला की ओर से अवतरित रसूल जिन माध्यमों से अपने मानने वालों को आध्यात्मिक रूप से ज़िंदा करता है उन में से एक महत्वपूर्ण माध्यम वे दुआएं हैं जो वह अपने मानने वालों के लिए करता है और अल्लाह तआला उन को स्वीकार कर लोगों के आध्यात्मिक जीवन के साधन करता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ما كانت النبوة قط الا تبعتها خلافة (कंज़ुल आमाल खंड 1) कि जब भी कोई नबी दुनिया में अवतरित होता है उस के बाद उस के काम को जारी रखने के लिए ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी होता है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद भी अल्लाह तआला के वादों और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार ख़िलाफ़त का निज़ाम जमाअत अहमदिया में स्थापित है और ख़िलाफ़त के आज्ञाकार लोग इन समस्त बरकतों से लाभान्वित हो रहे हैं जो ख़िलाफ़त से अल्लाह तआला ने

संलग्न कर रखी हैं और आध्यात्मिक रूप से पर इन ज़िंदा लोगों में शामिल हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद अब ख़िलाफ़त के माध्यम से जीवित हो रहे हैं। दुआ की स्वीकार्यता के माध्यम जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मानने वालों को आध्यात्मिक रूप से ज़िंदा करते रहे इसी तरह आप अलैहिस्सलाम के बाद आपके उत्तराधिकारी प्रत्येक ख़लीफ़--ए-वक़्त भी ज़िंदा करता रहा और अब भी यह सिलसिला ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा में अपनी पूरी शान के साथ जारी है।

पूर्व इसके कि मैं हज़रत अमीरुल मोमिनीन खलीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआ की स्वीकार्यता के कुछ वृतांत आपकी सेवा में प्रस्तुत करूँ। दुआ के लाभ, महत्व और इस की बरकतों के सबंध से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूँगा। क्योंकि इस ज़माने में आप ही वह वाहिद वजूद हैं जिन्हों ने दुआ के विषय से हर लेख को न सिर्फ विस्तार के साथ वर्णन किया है बल्कि हर अहमदी के दिल में इस विषय को इस रंग में रूप से दिलों में बैठा दिया है कि अब हर अहमदी की ज़िंदगी सिर्फ़ दुआ है और यही वह ग़िज़ा है जिससे वह अपनी आध्यात्मिक जीवन के साधन करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं :

"दुआ एक ज़बरदस्त ताक़त है जिससे बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ हल हो जाती हैं और कष्टदायक मार्गों को इन्सान बड़ी आसानी से तय कर लेता है। क्योंकि दुआ उस फ़ैज़ और क़ुव्वत को सोखने वाली नाली है जो अल्लाह तआला से आता है। जो व्यक्ति अधिकता से दुआओं में लगा रहता है वह आख़िर इस फ़ैज़ को खींच लेता है और ख़ुदा तआला से सहायता प्राप्त हो कर अपने उद्देश्यों को

प्राप्त कर लेता है....निश्चित समझो कि दुआ बड़ी दौलत है। जो व्यक्ति दुआ को नहीं छोड़ता उस के दीन और दुनिया पर आफ़त न आएगी। वह एक ऐसे क़िले में सुरक्षित है जिसके आस-पास हथियारबंद सिपाही हर वक़्त सुरक्षा करते हैं। लेकिन जो दुआओं से लापरवाह है वह उस व्यक्ति के समान है जो ख़ुद बे हथियार है और इस पर कमज़ोर भी है और फिर ऐसे जंगल में है जो काट खाने वाले जानवरों से भरा हुआ है। वह समझ सकता है कि इस की भलाई कदापि नहीं है। एक पल में वह काट खाने वाले जानवरों का शिकार हो जाएगा और इस की हड्डी बोटी नज़र न आएगी। इस लिए याद रखो कि इन्सान का बड़ा सौभाग्य और इस की सुरक्षा का वास्तविक माध्यम ही यही दुआ है। यही दुआ उस के लिए पनाह है अगर वह हरवक़्त इस में लगा रहे"। (मलफ़ूज़ात नंबर 7 सफ़ा 193-192 प्रिंट लंदन ऐडीशन 1984)

दुआ की स्वीकार्यता की अवस्था वर्णित करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

दुआ की वास्तविकता यह है कि एक नेक बन्दे और उसके रब्ब में एक आकर्षित करने वाला संबंध है अर्थात् पहले ख़ुदा तआला की रहमानियत अर्थात् दया शक्ति को अपनी ओर खींचती है। फिर बन्दे के सिद्क़ (सत्यता) के आकर्षण से ख़ुदा तआला उससे नज़दीक हो जाता है और दुआ की हालत में वह संबंध एक विशेष स्थान पर पहुंच कर अपनी अद्भुत विशेषताएं पैदा करता है। अत: जिस समय बन्दा किसी बड़ी मुश्किल में पड़ कर ख़ुदा तआला की ओर पूर्ण विश्वास और पूरी आशा और पूरी मुहब्बत और पूरी वफ़ादारी तथा पूरे साहस के साथ झुकता है और पूरी तरह सतर्क होकर भूल-चूक के पर्दों को चीरता हुआ फ़ना (अपने अस्तित्व को मिटा देना) के मैदान में आगे से आगे निकल जाता है, फिर आगे क्या देखता है कि अल्लाह का दरबार है और उसके साथ कोई शरीक नहीं तब उसकी रूह उस चौखट पर सर रख देती है और आकर्षण शक्ति जो उसके अन्दर रखी गई है वह ख़ुदा तआला की कृपा को अपनी ओर खींचती है। तब अल्लाह तआला जिसकी आभा प्रतिष्ठित है और उस कार्य को पूरा करने की ओर ध्यानाकर्षित होती है और उस दुआ का प्रभाव उन सभी बुनियादी कारणों पर डालता है जिन से ऐसे सामान उत्पन्न होते हैं जो उस मतलब की प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं। उदाहरणतया यदि वर्षा के लिए दुआ है तो दुआ की क़ुबूलियत के पश्चात् वह प्राकृतिक कारण जो वर्षा के लिए अनिवार्य होते हैं उस दुआ के प्रभाव से पैदा किये जाते हैं। अत: यदि अकाल के लिए बद्दुआ है तो सर्वशक्तिमान उलट कारणों को पैदा कर देता है। इसी कारण से

यह बात अह्ले कश्फ़ और कमाल रखने वाले महात्माओं के नज़दीक बड़े-बड़े तुजुर्बों से साबित हो चुकी है कि कामिल (महापुरुष) की दुआ में उत्पत्ति की शक्ति पैदा हो जाती है। अर्थात् अल्लाह तआला के आदेश पर वह दुआ धरती व आकाश में परिवर्तन करती है और पंचभूत तथा सौर मंडल और मनुष्यों के दिलों को उस ओर ले आती है। जिन का समर्थन करना उद्देश्य है।

(बरकातुद्दुआ रुहानी ख़ज़ाइन जल्द 6 सफ़ा 10-9)

पाठकगण! अब विनीत हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दुआ की स्वीकार्यता के बेशुमार वाक़ियात में से सिर्फ कुछ एक वाक़ियात वक़्त के अंदर प्रस्तुत करेगा। 1 ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ऐसी नेअमत है जो जहां प्यासी रूहों को तृप्त करती है वहां बंजर ज़मीनों की सींचाई के साधन भी करती है। जलसा सालाना 2012ई० की दूसरे दिन की तक़रीर के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने महाद्वीप अफ़्रीक़ा में ज़ाहिर होने वाले सैंकड़ों निशानों में से एक निशान का ज़िक्र इस तरह फ़रमाया :-

"अमीर साहिब माली लिखते हैं कि पिछले साल बहुत कम बारिश हुई जिसकी वजह से अत्यंत कठिनाई थीं। उन्होंने मुझे भी दुआ के लिए लिखा तो मैंने उनको कहा था कि नमाज़ इस्तिस्क़ा-ए- -पढ़ें। अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया। हमारे एक मुअल्लिम बयान करते हैं कि एक स्कूल टीचर मुहम्मद तोरे साहिब उनके पास आए और बताया कि वह बाक़ायदगी से रेडीयो अहमदिया सुनते थे लेकिन जमाअत से कोई संबंध नहीं था। एक दिन सुना कि जमाअत के ख़लीफ़ा ने इस इलाक़े के लिए बारिश की ख़ुसूसी दुआ की है। फिर उसने सुना कि माली जमाअत का अमीर उनके इलाक़े में आ रहा है तो दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि वह ख़ुद जा कर उसे मिले। अत: फ़राको (farako) गांव जहां प्रोग्राम था वह वहां पहुंच गया। वहां भी उसने अमीर से सुना कि इस इलाक़े में बारिशों के लिए ख़लीफ़तुल मसीह ने दुआ की है और फिर ख़ुसूसी नमाज़ पढ़ाई। उसने अपने दिल में रख लिया कि अगर इस साल असामान्य बारिश होती है तो सिर्फ दुआ का नतीजा होगा। क्योंकि कई साल से अच्छी बारिशें नहीं हुई थीं। जब बारिश का मौसम आया तो उसने देखा कि हर दूसरे तीसरे दिन बहुत बारिश हो जाती है। वह इस चीज़ का गवाह है कि गुज़श्ता दस सालों से ऐसी बारिशें नहीं हुईं। आज वह इसलिए आया है कि अहमदियत में दाख़िल हो क्योंकि ख़ुदा ख़लीफ़ा के साथ है। अलहमदुलिल्लाह। अब इस गांव में अधिकता से लोग बैअत कर रहे हैं।"

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 3 अगस्त 2018 सफ़ा 18)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस वर्ष रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ की तरफ़ से आयोजित God summit के मौक़ा पर अपने विशेष संदेश में कुछ वाक़ियात का वर्णन किया। उनमें से कुछ एक का वर्णन करता हूँ। 2 हुज़ूर ने फ़रमाया ईवोरी कोस्ट का एक वाक़िया हमारे मुअल्लिम ने लिखा। एक निष्कपट अहमदी हैं वहां अबदुल्लाह साहिब उनके बारे में लिखा कि मेरे भाई को इस तरह पुलिस पकड़ कर ले गई है और अदालत ने इस को नशा बेचने के जुर्म में बीस साल क़ैद की सज़ा सुना दी। कहते हैं मैं बड़ा परेशान था कि मेरे भाई को इस तरह पुलिस पकड़ के ले गई है। मुजरिम नहीं है। कहते हैं इस परेशानी की हालत में उन्होंने मुझे यहां लंदन में ख़त लिखा। कहते हैं ख़लीफ़तुल मसीह को मैंने ख़त लिखा दुआ के लिए और ख़ुद भी अपने भाई की रिहाई के लिए दुआ शुरू कर दी। कहते हैं लेकिन इस के बावजूद रिहाई की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। कहते हैं एक दिन ख़ाब में मैं ने देखा, मुझे लिख रहे हैं वह कि ख़लीफ़तुल मसीह को देखा, आपको देखा और आपने फ़रमाया कि परेशान न हो और सब्र करो तुम्हारा भाई जल्दी रहा हो जाएगा। सुबह जब मैं उठा तो मुझे बड़ी तसल्ली थी और यक़ीन था कि इंशा अल्लाह तआला, अल्लाह कोई चमत्कार दिखाएगा और मेरा भाई रिहा हो के आ जाएगा लेकिन भाई ने क्या रिहा होना था उल्टा कुछ दिन के बाद उनकी वालिदा की तबीयत ख़राब हो गई। उनको शहर के बड़े अस्पताल में ले जाना पड़ा और वहां उन्होंने दाख़िल कर लिया। कहते हैं मैं बड़ा परेशान कि पहले एक मुसीबत थी अब दूसरी मुश्किल भी आगई। वालिदा बीमार हो गई हैं, बड़ी करब की हालत थी, बड़ी बेबसी की हालत थी, बहुत परेशान था कि समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। फिर मैं ने दुआ की तो कहते हैं रात को सोया तो फिर उन्होंने मुझे ख़ाब में देखा और मैंने उनको कहा कि उट्ठो और जा के दरवाज़ा खोलो। कहते हैं मैं बेदार हो गया। एक दम में जागा, आँख खुली मेरी तो देखा दरवाज़े कोई knock कर रहा था। जा के मैंने दरवाज़ा खोला तो कहते हैं वहां मेरा बड़ा भाई मौजूद था। उसने कहा कि पुलिस ने मुझे आज रिहा कर दिया है और कहते हैं ये सब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुआओं की बरकत का चमत्कार है और ख़लीफ़ा वक़्त से ताल्लुक़ का चमत्कार है। (शेष अगले भाग में)